कक्षा में कहानी सुनाने से क्या होता है?

ईशा बडकस

मैं एक व्यापक लैंगिकता शिक्षा (Comprehensive Sexuality Education/ सीएसई) की रूपरेखा विकसित कर रही हूँ जो इस बात की वकालत करती है कि सीएसई को शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों से ही औपचारिक पाठ्यक्रम का एक सक्रिय हिस्सा होना चाहिए। अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे में महीने में एक बार कक्षा-5 से 10 तक के विद्यार्थियों के साथ मेरा जुड़ाव होता है। बड़े विद्यार्थियों के साथ, मैं अक्सर ज़्यादा सीधे तरीक़े से बातचीत शुरू करने का प्रयास करती हूँ। लेकिन कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ बातचीत की योजना अलग ढंग से बनाने की ज़रूरत होती है। मैंने यहाँ कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ 'कहानी कहने' को एक साधन के रूप में प्रयोग करने के अपने सीमित अनुभव को समेकित करने का प्रयास किया है; संक्षेप में, इस लेख में मैं कहानियों के साथ अपने ट्रायल-एंड-एरर प्रयोगों को साझा करूँगी।

कक्षा के वार्तालाप : मेरे अनुभव

कठिन विषयों पर बातचीत शुरू करना

कभी-कभी, किसी विषय पर बातचीत शुरू करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि ऐसा लगता है कि शुरुआत करने के लिए कोई उपयुक्त बिन्दु नहीं हैं। ऐसी स्थितियों में, कहानियाँ, कविताएँ और फ़िल्में बातचीत को गति देने के लिए स्वाभाविक रूप से काफ़ी उपयोगी होते हैं। मेरे अनुभव में, *सिर का सालन, क्यूँ-क्यूँ लड़की, प्यारी मैडम, बरास्ता तरबूज़* जैसी कहानियाँ लोगों के दैनिक अनुभवों को शब्दों में पिरोकर जाति, वर्ग, धर्म, लिंग जैसे कई जटिल सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं। सचित्र पुस्तकें जटिल सामाजिक रिश्तों पर संवाद शुरू करने में मदद कर सकती हैं और किसी की भावनाओं पर स्वाभाविक तरीक़े से चिन्तन को प्रोत्साहित कर सकती हैं। ऐसी कहानियाँ शहरी कक्षाओं में विशेष महत्त्व रखती हैं जहाँ अधिकांश विद्यार्थी सामाजिक-आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों से आते हैं।

सुनने की जगह बनाना

जिस तरह सवाल बातचीत शुरू करने में मदद करते हैं, व्यक्तिगत अनुभव बाँटने से विद्यार्थियों को एक-दूसरे से सम्बन्ध बनाने या समानुभूति महसूस करने का मौक़ा मिलता है। कहानियों के विभिन्न पात्र कभी-कभी विद्यार्थियों को अपने जीवन संघर्षों को कहानी के एक पात्र के साथ जोड़ने का मौक़ा देते हैं या कभी-कभी वे लोगों की विभिन्न सामाजिक वास्तविकताओं के बारे में सीखते हैं। कहानियों में दर्शाई गई अलग-अलग ज़िन्दगियों और अलग-अलग विचारों से विद्यार्थियों में अधिक समावेशी, स्वीकार्य रवैया उत्पन्न हो सकता है।

रचनात्मकता, जिज्ञासा और चिन्तन के लिए जगह बनाना

कहानियों के माध्यम से विभिन्न तरह की गतिविधियाँ और अभ्यास विकसित किए जा सकते हैं। नीचे उल्लिखित कुछ गतिविधियों को अधिकांश कहानियों के साथ विद्यार्थियों के या सन्दर्भों के अनुरूप परिवर्तित करके आज़माया जा सकता है। रंगमंच गतिविधियाँ, जैसे रोल-प्ले (भूमिका निर्वाह), एक ऐसा वातावरण बना सकती हैं जहाँ विद्यार्थी किसी और के जैसे बन सकते हैं। किसी और की तरह होना कैसा लगता है इसका अनुभव स्वयं को बेहतर ढंग से समझने की प्रक्रिया को सक्षम बनाता है। ये गतिविधियाँ भाषा सीखने, शब्दावली निर्माण और अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीक़े आज़माने में मदद करती हैं।

अकादमिक चर्चाओं के लिए ज़मीन तैयार करना

कहानियाँ कक्षा के भीतर पाठ्यचर्या सम्बन्धी अनेक सम्बन्ध ला सकती हैं। उदाहरण के लिए, *क्यूँ-क्यूँ लड़की* कहानी पढ़ते समय सामाजिक न्याय, लिंग, जाति जैसे कई विषय सामने आए जिनका सीधा सम्बन्ध सामाजिक विज्ञान से है। इस तरह के सम्बन्ध सामाजिक विज्ञान कक्षाओं में काम आ सकते हैं क्योंकि कहानी की किताबों में से उपयुक्त सन्दर्भों के सहारे बातचीत की जा सकती है। समाज में दमनकारी संरचनाओं पर सवाल उठाने वाली कथाएँ रूढ़ियों और पाबन्दियों को चुनौती देने के अवसर प्रदान करती हैं, जिससे कक्षाओं में चिन्तनशील शैक्षणिक जुड़ाव पैदा होता है।

सुगमकर्ता की भूमिका

मैंने कहानी सुनाने के सत्र के लिए एक व्यापक पाठ योजना बनाने की हमेशा कोशिश की है लेकिन मुझे एहसास हुआ है कि ऐसे सत्र तब अधिक सार्थक होते हैं जब वे सहज और मुक्त-प्रवाह वाले होते हैं। जब मैं कोई कहानी पढ़ती हूँ तो मैं आमतौर पर बहुत सारे प्रश्न पूछती हूँ जो प्रक्रिया को अधिक

सहभागी बनाता है। एक सुगमकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह चर्चा पर मन्थन करे, उसे समेकित करे और आगे बढ़ते हुए प्रासंगिक बिन्दुओं और प्रश्नों को उजागर करे। शिक्षक और शिक्षाविद, कहानियों के माध्यम से जितने सम्भव हों उतने विषय-सम्बन्धित सन्दर्भ लाने का प्रयास कर सकते हैं ताकि विद्यार्थी आसानी से अनुभवों को आपस में जोड़ सकें।

इस खण्ड में, मैं पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ महाश्वेता देवी की कहानी *क्यूँ-क्यूँ लड़की* पढ़ने के अपने अनुभव के बारे में बात करने जा रही हूँ। यह कहानी एक 10 वर्षीय आदिवासी लड़की मोयना के बारे में है, जो जिज्ञासु है और उसके आस-पास होने वाली हर चीज़ पर 'क्यूँ' सवाल पूछती है। मोयना के प्रश्न हमें प्रकृति के चमत्कारों के बारे में सोचने पर भी मजबूर करते हैं, साथ ही हमें सामाजिक अन्याय पर सवाल उठाने पर मजबूर करते हैं। कहानी की शुरुआत मोयना के एक बड़े साँप के पीछे दौड़ने और उसे पकड़ने की कोशिश से होती है, क्योंकि उसके परिवार में साँपों को खाया जाता है। इस बिन्दु पर, विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के मांसों पर चर्चा कर रहे थे जो मनुष्य खाते हैं। कुछ विद्यार्थियों को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि साँपों को भी खाया जाता है।

मोयना घर के और अन्य कामों के बारे में बात करती है जो उसे हर रोज़ करने होते हैं। चूँकि मोयना और कक्षा-5 के विद्यार्थी लगभग एक ही उम्र के थे, इसलिए उनके लिए यह समझना आश्चर्यजनक था कि मोयना का जीवन उनसे बहुत अलग था। विद्यार्थियों में से एक ने कहा कि मोयना और जामलो (कहानी *जामलो चलती गई* की नायिका) दोनों का जीवन उनकी तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण था और बचपन के उनके अनुभव एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। मोयना और जामलो, दोनों पर विभिन्न तरीक़ों से अपने परिवारों का सहयोग करने की ज़िम्मेदारियाँ हैं, जिनमें वित्तीय सहायता भी एक है। संक्षेप में, कई चीज़ें और सुविधाएँ जो मेरे विद्यार्थियों के लिए आसानी से उपलब्ध हैं और जो उन्हें लगता है कि हर बच्चे के लिए उपलब्ध होती हैं, मोयना और जामलो जैसे बच्चों के लिए रोज़मर्रा का संघर्ष है।

कहानी में मोयना की जनजाति (शबर) का उल्लेख है और बताया गया है कि शबर समुदाय के पास भूमि और संसाधन नहीं हैं। हालाँकि समुदाय के सदस्यों को इस बारे में कोई शिकायत नहीं है, लेकिन यह मोयना ही है जिसके सवाल, संसाधनों के असमान विभाजन की पड़ताल करते हुए, दिन-ब-दिन अधिक गहरे होते जा रहे हैं। हमारे जैसे शहरी कक्षा में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के संघर्षों को सामने लाना महत्त्वपूर्ण है ताकि विद्यार्थियों को उनके विशेषाधिकार प्राप्त जीवन के बारे में जागरूक किया जा सके और यह एहसास दिलाया जा सके कि इस लाभप्रद परिस्थिति के साथ कोई क्या कर सकता है।

एक और चर्चा तब शुरू हुई जब मोयना सोचने लगी कि उन्हें उन ज़मींदारों द्वारा दिया गया बासी ख़ाना क्यों खाना पड़ता है जहाँ वह काम करती है। यहाँ विद्यार्थियों ने अपने घरों के अनुभव साझा करना शुरू किए जहाँ भी बचा हुआ ख़ाना घरेलू सहायिका को दे दिया जाता है। कुछ विद्यार्थियों ने महसूस किया कि लोगों को अतिरिक्त/ बचा हुआ भोजन देना उचित ही है क्योंकि अगर इसे नहीं दिया गया तो यह वैसे भी बर्बाद हो जाता है। दूसरी ओर, कुछ विद्यार्थियों को खेद हुआ क्योंकि वे समझ गए थे कि बासी भोजन प्राप्त करना अच्छा नहीं लगता होगा, भले ही यह नेक इरादे से दिया गया हो।

कुछ विद्यार्थियों ने इस सत्र से कुछ समय पहले आदिवासी पाड़ा (आदिवासी बस्ती) का दौरा किया था, इसलिए वे तुरन्त मोयना के गाँव के विवरण की कल्पना कर सकते थे। विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल का समय गाँव के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं होने पर सवाल उठाया और यह विचार व्यक्त किया कि चूँकि स्कूल विद्यार्थियों के लिए है, इसलिए इसका समय बच्चों की दिनचर्या को देखते हुए रखा जाना चाहिए। हालाँकि मोयना ख़ुद से और अपने आस-पास के लोगों से ये महत्त्वपूर्ण सवाल पूछ रही थी। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि हम भी पाठक के रूप में, मोयना जैसे बच्चों के लिए शिक्षा और अन्य बुनियादी ज़रूरतों तक पहुँच में असमानता पर सवाल उठाएँ।

फिर, हमने सामूहिक रूप से इस बारे में सोचा : क्या हम अपने आस-पास होने वाली चीज़ों और व्यवहारों के बारे में भी 'क्यों' पूछते हैं? या क्या हम इन्हें वैसे ही स्वीकार कर लेते हैं जैसे ये हैं? चर्चा के बाद, एक गतिविधि की गई जिसमें विद्यार्थियों को अपनी आँखें बन्द करने और उस समय उभरे दो प्रश्नों के बारे में सोचने के लिए कहा गया - वे प्रश्न जिनके बारे में हो सकता है वे कुछ समय से सोच रहे हों। कुछ प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार थीं :

ख़ुद पर और शरीर पर सवाल उठाना	• जब मैंने बाल कटवाए तो सभी ने मुझसे कहा कि मैं बुरी दिख रही हूँ; कि मैं उनकी दोस्त नहीं हूँ। क्या बाल कटवाने का मेरा निर्णय ग़लत था? • क्या केवल महिलाएँ ही बच्चे पैदा कर सकती हैं? • कभी-कभी, मेरे आस-पास के विद्यार्थी बहुत मतलबी होते हैं। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं इस स्कूल में नई हूँ?

समाज और जेंडर भूमिकाओं पर सवाल उठाना	• क्या इसलिए कि मैं एक लड़का हूँ, मुझे घर पर ख़ाना बनाने की इजाज़त नहीं है? • साँवले/ काले रंग वाले लोगों को हीन या निम्न क्यों माना जाता है? • लोग दूसरों को गाली क्यों देते हैं? • जब वे अपशब्दों का प्रयोग करते हैं तो उनका क्या मतलब होता है? ये शब्द किसने बनाए? • शिशुओं की त्वचा का रंग कौन तय करता है? • अगर दो लोग एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो दूसरे लोगों को इसकी परवाह क्यों होनी चाहिए? • क्या किसी लड़की और लड़के को एक साथ देखने पर उन्हें ताने कसना क्यों ज़रूरी है? • क्या वे सिर्फ़ दोस्त नहीं हो सकते? • ऐसा क्यों है कि घर पर केवल मेरे दादाजी ही पूजा करते हैं? • किसी आदिवासी पाड़े में केवल एक ही स्कूल क्यों होता है?
कल्पना-जिज्ञासा	• क्या भूत-प्रेत अपने घर बनाते हैं? • क्या हर समय अपने माता-पिता की आज्ञा मानना ज़रूरी है? • कुछ लोगों को लाइलाज बीमारियाँ हो जाती हैं। ऐसी बीमारियाँ क्यों होती हैं? • क्या कल्पना में मौजूद चीज़ें वास्तविकता में आकार ले सकती हैं? • इतिहास में वास्तव में क्या हुआ था? • कक्षा में हमारे पेन कौन चुराता है?
भावनाएँ	• मैं क्यों नहीं जान सकता कि दूसरे लोग इस दुनिया को कैसे देखते हैं? • क्या चिल्लाने का मतलब अनिवार्य रूप से किसी को डाँटना या ग़ुस्सा होना होता है?

कहानी सुनाने वाली गतिविधियाँ

ऐसी विभिन्न गतिविधियाँ हैं जिन्हें शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) के रूप में कहानी की किताबों के साथ कक्षा में आज़माया जा सकता है। यहाँ पाँच ऐसी समूह गतिविधियाँ दी गई हैं जो सहयोग, रचनात्मकता और सवाल उठाने की सम्भावनाएँ उभार सकती हैं।

कथानक बदलना

इस गतिविधि में, प्रत्येक समूह को एक ही कहानी के एक अलग पात्र के दृष्टिकोण से पूरी कहानी को फिर से लिखने का प्रयास करने के लिए कहा जाता है। ऐसे अभ्यासों के माध्यम से दिलचस्प मोड़ विकसित होते हैं, जैसे कि प्रतिभागी अपने आप को किसी नए पात्र की जगह पर रखते हुए अलग-अलग दृष्टिकोणों से अन्य पात्रों के साथ स्थितियों और संवादों की कल्पना करने की कोशिश करते हैं।

अन्त का अनुमान लगाएँ/ अन्त बदलें

इस गतिविधि को संचालित करने के दो तरीक़े हैं : या तो सुगमकर्ता कहानी पढ़ सकती है और उसके चरम बिन्दु पर रुककर विद्यार्थियों को समूहों में सम्भावित अन्त पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित कर सकती है या वह पूरी कहानी पढ़कर विद्यार्थियों को कहानी में बदलाव करने के लिए आमंत्रित कर सकती है, अगर वे ऐसा करना चाहें तो।

एक पात्र जोड़ें और कहानी फिर से लिखें

इस गतिविधि में, विद्यार्थियों को कहानी में एक बिल्कुल नया पात्र जोड़ने और अन्य पात्रों के साथ इस नए पात्र की यात्रा लिखने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अभिनय करें!

रंगमंच की गतिविधियाँ सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (socio-emotional learning/ एसईएल) के पहलू में बहुत मदद करती हैं। जब विद्यार्थी कहानी में पात्रों को निभाते हैं, तो वे उनके जीवन से पहचान बनाना शुरू कर देते हैं। इसके अलावा, सहभागी रंगमंच की शुरुआत की जा सकती है जिसमें विद्यार्थी कहानी का अभिनय करते हैं और एक विशेष क्षण पर रुकते हैं जहाँ दर्शकों को मंच पर पात्रों को बदलने और दृश्य में सहज प्रतिक्रिया देने के लिए कहा जाता है जैसे कि वे उस पात्र को निभा रहे हों। यह किसी भी स्थिति को देखने के विभिन्न दृष्टिकोण सामने लाता है।

कहानी का आवरण पृष्ठ डिज़ाइन करना और शीर्षक तय करना

सुगमकर्ता कहानी की पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर कवर चढ़ाकर पूरी कहानी को पढ़ती है। कहानी सुनाने और चर्चा समाप्त हो जाने के बाद, विद्यार्थी जोड़े में बैठते हैं और चर्चा के आधार पर कहानी के लिए एक आवरण पृष्ठ की कल्पना करते हैं और कहानी के लिए उपयुक्त शीर्षक के बारे में सोचते हैं।

जैसा कि स्पष्ट है, कहानी की किताबें बहुत अच्छे टीएलएम हैं। कक्षा में कहानी पढ़ना निश्चित रूप से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन विभिन्न रूपों में उनके साथ जुड़ने से अलग-अलग रास्ते खुलते हैं। जब मैं बड़ी हो रही थी तो मैंने बहुत सारी कहानियों की किताबें पढ़ीं। हालाँकि हमारे पास सप्ताह में दो बार पुस्तकालय का पीरियड उपलब्ध था, लेकिन पुस्तक चर्चा पाठ्यक्रम में शामिल नहीं थी। यह अलगाव समस्याग्रस्त है क्योंकि यह कहानी की किताबों के विषय और कथानक के साथ पाठ्यचर्या के विषयों के घनिष्ठ सम्बन्ध को रोकता है। मुझे लगता है कि कहानियों में अपार सम्भावनाएँ हैं जिन्हें तलाशते हुए हमें, सुगमकर्ताओं के रूप में, ईमानदार बातचीत, विचारों का आदान-प्रदान और, सबसे महत्त्वपूर्ण बात, सुनने की क्षमता विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

ईशा बडकस पिछले चार वर्षों से एकलव्य के साथ काम कर रही हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। उनकी रुचि संवाद के लिए जगह बनाकर लैंगिकता और यौनिकता की पड़ताल करने में है। उनसे *ishabadkas@eklavya.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अनु गुप्ता **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय